S. S. Jain Subodh P.G. College (Autonomous)
Jaipur

SYLLABUS

TWO YEAR POST GRADUATE PROGRAMME IN ARTS (M.A.)

Subject/Discipline: Hindi (हिन्दी)

I & II SEMESTER EXAMINATION 2023-24

III & IV SEMESTER EXAMINATION 2024-25

As per NEP-2020

S. S. Jain Subodh P.G. College (Autonomous)
Jaipur

FACULTY OF ARTS

Programme Name: TWO YEAR POST GRADUATE PROGRAMME IN ARTS (M.A.)

Subject/Discipline: Hindi (हिन्दी)

(Syllabus as per NEP-2020 and Choice Based Credit System)

Medium of Instruction: Hindi

w.e.f. Academic Session 2023-24

कला में स्नातकोत्तर

विषय : हिन्दी

परीक्षा योजना एवं विस्तृत पाठ्यक्रम संरचना सत्र : 2023–24, 2024-25

प्रथम सेमेस्टर

S.No.	Subject Code	Course Title	Course Category	Credit	Contact Hours Per Week	
					L	
1.	MHIN-101	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल एवं भक्तिकाल)	DSC-1	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
2.	MHIN-102	प्राचीन काव्य	DSC-2	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
3.	MHIN-103	काव्यशास्त्र -I (भारतीय)	DSC-3	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
4.	MHIN-104	हिन्दी गद्य -I (उपन्यास एवं निबन्ध)	DSC-4	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर

द्वितीय सेमेस्टर

S.No.	Subject Code	Course Title	Course Category	Credit	Contact Hours Per Week	
					L	
1.	MHIN-201	हिन्दी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल एवं आधुनिक काल)	DSC-1	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
2.	MHIN-202	मध्यकालीन काव्य	DSC-2	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
3.	MHIN-203	काव्यशास्त्र -II (पाश्चात्य)	DSC-3	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
4.	MHIN-204	हिन्दी गद्य -II (हिन्दी कहानी)	DSC-4	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर

तृतीय सेमेस्टर

S.No.	Subject Code	Course Title	Course Category	Credit	Contact Hours Per Week	
					L	
1.	MHIN-301	हिन्दी गद्य -III (हिन्दी नाटक)	DSC-1	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
2.	MHIN-302	निर्गुण काव्य	DSC-2	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
3.	MHIN-303	भाषा विज्ञान -I	DSC-3	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
4.	MHIN-304	रीतिकालीन काव्य	DSC-4	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
5(A).	MHIN-305 (A)	(क) कवि, साहित्यकार (1) तुलसीदास	DSE-5	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
5(B).	MHIN-305 (B)	(ख) कवि, साहित्यकार (2) प्रेमचन्द	DSE-5	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
5(C).	MHIN-305 (C)	(ग) शोध प्रविधि	DSE-5	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर

चतुर्थ सेमेस्टर

S.No.	Subject Code	Course Title	Course Category	Credit	Contact Hours Per Week	
					L	
1.	MHIN-401	आलोचना एवं आलोचक	DSC-1	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
2.	MHIN-402	आधुनिक काव्य -I	DSC-2	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
3.	MHIN-403	भाषा विज्ञान -II	DSC-3	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
4.	MHIN-404	आधुनिक काव्य -II	DSC-4	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
5(A).	MHIN-405 (A)	(क) कवि, साहित्यकार (1) तुलसीदास	DSE-5	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
5(B).	MHIN-405 (B)	(ख) कवि, साहित्यकार (2) प्रेमचन्द	DSE-5	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर
5(C).	MHIN-405 (C)	(ग) लघुशोध प्रबंध (Desertation)	DSE-5	6	4	60 घण्टे / कक्षा प्रति सेमेस्टर

Curriculam Framework of M.A. – Hindi

(i)	Title of the Course	एम.ए. हिन्दी
(ii)	Level of the Course	स्नातकोत्तर
(iii)	Credit of the Course	108 क्रेडिट
(iv)	Delivery sub-type of the course	व्याख्यान, चॉक एण्ड टॉक मेथॅड, पीपीटी
(v)	Pre-requisite of the course	पूर्वापेक्षा – एक भाषा के रूप में हिन्दी न केवल भारत की पहचान है, बल्कि यह भारतीय जीवन–मूल्यों, संस्कृति और संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिन्दी विश्व की सबसे प्रमुख वैज्ञानिक भाषा है।
(vi)	Objectives of the course	उद्देश्य :– 1. वैश्वीकरण के युग में शिक्षा–जगत के समक्ष आ रही चुनौतियों का समाधान करने के उद्देश्य से। 2. विद्यार्थियों की अभिरूचि, उनकी ग्राह्य क्षमता एवं रोजगारोन्मुखी – लचीली – शिक्षण – व्यवस्था निर्मित करने हेतु। 3. विद्यार्थियों के भाषायी विकास और उसे समुन्नत बनाने हेतु। 4. विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को बढ़ाना। 5. विद्यार्थियों में साहित्यिक और अन्य मौलिक रचनाओं के प्रति उनकी समझ व रूचि विकसित करने के उद्देश्य से। 6. साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी भारतीय संस्कृति और परम्परा का ज्ञान कराना। 7. साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में अच्छे–बुरे की पहचान की क्षमता विकसित करना तथा जीवन–मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा देना। 8. हिन्दी भाषा को शुद्ध बोलने तथा शुद्ध लिखने का ज्ञान देना। 9. हिन्दी भाषा में स्पष्ट रूप से अपने भाव और अनुभूतियों एवं विचारों को व्यक्त करना सिखाना।
(vii)	Syllabus	संपूर्ण पाठ्यक्रम (संलग्न)
(viii)	Scheme of Examination	परीक्षा प्रणाली / मूल्यांकन प्रणाली (संलग्न)
(ix)	Suggested books and reference including links to e-resources, and	संदर्भ ग्रंथ सूची (संलग्न)
(x)	Learning Outcome of the course	अधिगम प्रतिफल :– हिन्दी साहित्य का अध्ययन–अध्यापन वर्तमान युग की महती आवश्यकता है। सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है करीब 90 करोड़ लोग हिन्दी भाषा बोलते–समझते हैं। हिन्दी भाषा एवं साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। हिन्दी ने तकनीक की भाषा के रूप में स्वयं को ढाल लिया है। हिन्दी में विविध क्षेत्रों में रोजगार की बहुत अधिक सम्भावनाएँ हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में दक्षता हेतु। विद्यार्थियों में रचना कौशल का विकास करने के लिए।

कला में स्नातकोत्तर

विषय : हिन्दी साहित्य

परीक्षा योजना एवं विस्तृत पाठ्यक्रम संरचना सत्र : 2023–24

सेमेस्टर : प्रथम (I)

प्रश्न पत्र संख्या	प्रश्न प्रत्र का नाम	ESE	Int.	Total	Duration (EOSE)
1	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल एवं भक्तिकाल) (MHIN-101)	70	30	100	3 Hrs.
2	प्राचीन काव्य (MHIN-102)	70	30	100	3 Hrs.
3	काव्यशास्त्र -I (भारतीय) (MHIN-103)	70	30	100	3 Hrs.
4	हिन्दी गद्य -I (उपन्यास एवं निबन्ध) (MHIN-104)	70	30	100	3 Hrs.

सेमेस्टर : द्वितीय (II)

प्रश्न पत्र संख्या	प्रश्न प्रत्र का नाम	ESE	Int.	Total	Duration (EOSE)
1	हिन्दी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल एवं आधुनिक काल) (MHIN-201)	70	30	100	3 Hrs.
2	मध्यकालीन काव्य (MHIN-202)	70	30	100	3 Hrs.
3	काव्यशास्त्र -II (पाश्चात्य) (MHIN-203)	70	30	100	3 Hrs.
4	हिन्दी गद्य -II (हिन्दी कहानी) (MHIN-204)	70	30	100	3 Hrs.

सेमेस्टर : तृतीय (III)

प्रश्न पत्र संख्या	प्रश्न प्रत्र का नाम	ESE	Int.	Total	Duration (EOSE)
1	हिन्दी गद्य -III (हिन्दी नाटक) (MHIN-301)	70	30	100	3 Hrs.
2	निर्गुण काव्य (MHIN-302)	70	30	100	3 Hrs.
3	भाषा विज्ञान -I (MHIN-303)	70	30	100	3 Hrs.
4	रीतिकालीन काव्य (MHIN-304)	70	30	100	3 Hrs.
5(A)	(क) कवि, साहित्यकार (1) तुलसीदास (MHIN-305 (A))	70	30	100	3 Hrs.
5(B)	(ख) कवि, साहित्यकार (2) प्रेमचन्द (MHIN-305 (B))	70	30	100	3 Hrs.
5(C)	(ग) शोध प्रविधि (MHIN-305 (C))	70	30	100	3 Hrs.

सेमेस्टर : चतुर्थ (IV)

प्रश्न पत्र संख्या	प्रश्न प्रत्र का नाम	ESE	Int.	Total	Duration (EOSE)
1	आलोचना एवं आलोचक (MHIN-401)	70	30	100	3 Hrs.
2	आधुनिक काव्य -I (MHIN-402)	70	30	100	3 Hrs.
3	भाषा विज्ञान -II (MHIN-403)	70	30	100	3 Hrs.
4	आधुनिक काव्य -II (MHIN-404)	70	30	100	3 Hrs.
5(A)	(क) कवि, साहित्यकार (1) तुलसीदास (MHIN-405 (A))	70	30	100	3 Hrs.
5(B)	(ख) कवि, साहित्यकार (2) प्रेमचन्द (MHIN-405 (B))	70	30	100	3 Hrs.
5(C)	(ग) लघुशोध प्रबंध (Desertation) (MHIN-405 (C))	-	-	100	3 Hrs.

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. प्रीवियस हिन्दी)
प्रथम सेमेस्टर पाठ्यक्रम
प्रथम प्रश्न–पत्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल एवं भक्तिकाल) (MHIN-101)
06 क्रेडिट 60 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन प्रश्न निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 500 शब्द) प्रत्येक खण्ड़ से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 3×20 = 60 अंक
2. दो प्रश्न टिप्पणीपरक (शब्द सीमाः 200 शब्द) तीनों खण्ड़ों में से (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 2×5 = 10 अंक

70 अंक

3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. हिन्दी भाषा की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए भाषा के इतिहास की आवश्यकता पड़ती है। हिन्दी भाषा की समृद्ध परम्परा को जानने के लिए हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़ना–पढ़ाना आवश्यक है।
2. भाषा के इतिहास की जानकारी प्राप्त कर विद्यार्थी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ–साथ सरकारी और गैर–सरकारी, निजी तथा संस्थागत क्षेत्रों में अपने भविष्य का निर्माण कर सकते है।
3. वर्तमान में नई शिक्षा नीति के साथ हिन्दी साहित्य की उपयोगिता महत्त्वपूर्ण हो गई है। नई शिक्षा नीति में त्रिभाषा फॉर्मूला लागू किया गया है।

पाठ्यांशः

खण्ड–क– हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन एवं नामकरण, आदिकालीन काव्य धाराएँ – सिद्धनाथ एवं जैन साहित्य, प्रमुख रासो काव्य और उनकी प्रामाणिकता, अमीर खुसरो की हिन्दी कविता, विद्यापति की कीर्तिलता और पदावली, आदिकालीन हिन्दी साहित्य की सामान्य विशेषताएँ। **15 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ख– मध्यकाल : भक्ति आन्दोलन : उदय के सामाजिक–सांस्कृतिक कारण, भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्तः प्रादेशिक वैशिष्ट्य। हिन्दी सन्तकाव्य–वैचारिक आधार, भारतीय धर्म साधना और हिन्दी का संत काव्य, प्रमुख संतःकबीर, नानक, दादू, रैदास, रज्जब तथा जम्भनाथ। हिन्दी सूफी काव्य–वैचारिक आधार, हिन्दी में प्रेमाख्यानों की परम्परा, सूफी प्रेमाख्यान का स्वरूप, हिन्दी का सूफीकाव्य, प्रमुख सूफी कवि–मुल्ला दाऊद, कुतुबन, मंझन तथा जायसी। **30 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ग– हिन्दी कृष्ण काव्य– वैचारिक आधार और विभिन्न सम्प्रदाय, कृष्ण भक्ति शाखा के कवि और काव्य। प्रमुख कवि–सूरदास, नन्ददास, मीरा, रसखान। हिन्दी रामकाव्य–वैचारिक आधार और विभिन्न सम्प्रदाय, राम भक्ति शाखा के कवि और काव्य। **15 घण्टे / कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. विद्यार्थियों में हिन्दी साहित्य का इतिहास न केवल व्यक्तिगत परिवर्तन बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिये भी शिक्षा की परिवर्तनकारी क्षमता का पता लगाने का प्रयास करता है।
2. यह पेपर छात्र–शिक्षकों के युवा मन में उठने वाले प्रश्नों और इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिये उन्हें मिली कुछ दिशाओं को स्पष्ट करता है।

अनुशंसित ग्रंथः–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र (सं.), 3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, 4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ. रामकुमार वर्मा, 5. हिन्दी साहित्य का आदिकाल : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, 6. हिन्दी साहित्य की भूमिका : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, 7. हिन्दी साहित्य का अतीत (दो भाग) : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, 8. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह, 9. हिन्दी साहित्य और संवदेना का विकास : डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी।

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. प्रीवियस हिन्दी)
प्रथम सेमेस्टर पाठ्यक्रम
द्वितीय प्रश्न–पत्र : प्राचीन काव्य (MHIN-102)
06 क्रेडिट 60 घण्टे/कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन व्याख्याएँ प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे) 3×8 = 24 अंक
2. तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे। 1×16 = 16 अंक
   2×15=30 अंक
   70 अंक
3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. इसमें आदिकाल, मध्यकाल के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पक्ष से विद्यार्थियों को जोड़ना है।
2. उस दौर में रचे भाषा के इतिहास, जिसमें पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवधी, ब्रज में लिखे कवियों की रचनाओं में समाहित उनके दर्शन से परिचय कराना है। जिससे विद्यार्थियों में मानवीय दृष्टि विकसित हो सके।
3. विद्यार्थी भाषा के महत्व को जानकर उसमें और अधिक नवाचार लाने, सहज ग्राह्य बनाने का प्रयास कर सके।
4. मौलिक रूप से स्वयं के शब्दकोश को समृद्धशाली बना सके।

पाठ्यांश:

खण्ड–क– बीसलदेव रासो: नरपति नाल्ह – सं. माताप्रसाद गुप्त, पद संख्या 67–76 तक। **20 घण्टे/कक्षा**

खण्ड–ख– विद्यापति – सं. शिवप्रसाद सिंह (पद संख्या 8, 10, 11, 16, 19, 26, 36, 40, 47, 48)। **25 घण्टे/कक्षा**

खण्ड–ग– ढोला मारू रा दूहा : कुशललाभ – रामसिंह, सूर्यकरण पारीक, नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर राजस्थान (दोहा संख्या 1 से 20 तक)। **15 घण्टे/कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. इस प्रश्न–पत्र में विद्यार्थी प्राचीन काव्य का अध्ययन करेंगे, इस प्रश्न–पत्र के द्वारा उस युग की प्रतिनिधि रचनाओं का अध्ययन किया जायेगा।
2. प्राचीन काव्य द्वारा विद्यार्थियों में भारतीय प्राचीन साहित्य के विविध भाषा साहित्य के कवियों को समझने में सहायता होगी तथावे एक वैचारिक क्षमता को रेखांकित करने में समर्थ होंगे।

अनुशंसित ग्रंथ:

1. हिन्दी साहित्य का आदिकाल : आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. विद्यापति : डॉ. शिवप्रसाद सिंह
3. विद्यापति : डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित
4. आदिकालीन हिन्दी साहित्य : डॉ. शम्भूनाथ पाण्डेय
5. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ. मोतीलाल मेनारिया
6. राजस्थानी पिंगल साहित्य : डॉ. मोतीलाल मेनारिया

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. प्रीवियस हिन्दी)
प्रथम सेमेस्टर पाठ्यक्रम
तृतीय प्रश्न–पत्र : काव्यशास्त्र -I (भारतीय) (MHIN-103)

06 क्रेडिट 60 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन प्रश्न निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 500 शब्द) प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 3×20 = 60 अंक
2. दो प्रश्न टिप्पणीपरक (शब्द सीमा: 200 शब्द) तीनों खण्डों में से (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 2×5 = 10 अंक

70 अंक

3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि–	3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन–	30 अंक
अधिकतम अंक–	100 अंक
न्यूनतम अंक–	40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी के लिए भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा एवं काव्य शास्त्र का ज्ञान अति आवश्यक है।
2. शिक्षा, पब्लिशिंग हाउस, मीडिया, सामाजिक सेवाएं, संचार, कम्प्यूटर, लैंग्वेज, अनुसंधान, भाषा संबंधी क्षेत्रों में भाषा विज्ञान के बारे में अनुभव बेहद जरूरी है। हाल के वर्षों में विभिन्न उद्योगों में भाषा–विज्ञानियों की बेहद मांग है।
3. केन्द्रीय संस्थानों और कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति की जाती है जो अपने यहाँ हर प्रकार से हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देते हैं और हिन्दी में कामकाज को सुगम बनाते हैं। यदि आपने हिन्दी विषय के साथ में अंग्रेजी भी पढ़ी है तो राजभाषा अधिकारी या हिन्दी अनुवादक के रूप में भी कॅरियर बनाया जा सकता है।
4. नयी हिन्दी के जो क्षेत्र उभरे हैं उनमें यदि छात्र दक्षता हासिल कर लेता है तो सिनेमा में पटकथा लेखन, संवाद लेखन, गीत लेखन में रोजगार की व्यापक संभावनाएं हैं।

पाठ्यांशः

खण्ड–क– साहित्य की परिभाषा, साहित्य की प्रमुख विधाओं का सैद्धान्तिक स्वरूप और विवेचना–प्रबन्ध काव्य (महाकाव्य, खण्डकाव्य), मुक्तक काव्य (गीतिकाव्य, प्रगीतिकाव्य)। **20 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ख– हिन्दी की गद्य विधाएँ : उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज। **15 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ग– भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास एवं काव्यशास्त्र के विविध सम्प्रदायः रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति, अलंकार, औचित्य। **25 घण्टे / कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. इस प्रश्न–पत्र द्वारा विद्यार्थियों में काव्यशास्त्रियों के विचार एवं सिद्धान्त का अनुशीलन किया जायेगा।
2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम विद्यार्थियो में तार्किक तथा विश्लेषणात्मक प्रकृति का विकास करता है। साथ ही आलोचनात्मक अथवा समीक्षात्मक दृष्टि को विकसित करता है।

अनुशंसित ग्रंथः

1. साहित्यालोचन : श्यामसुन्दरदास
2. काव्यशास्त्र : डॉ. भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. भारतीय साहित्यशास्त्र भाग एक : बलदेव उपाध्याय
4. भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा : डॉ. नगेन्द्र
5. भारतीय काव्यशास्त्र : सत्यदेव चौधरी

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. प्रीवियस हिन्दी)
प्रथम सेमेस्टर पाठ्यक्रम
चतुर्थ प्रश्न–पत्र : हिन्दी गद्य -I (हिन्दी उपन्यास एवं निबन्ध) (MHIN-104)
06 क्रेडिट 60 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन व्याख्याएँ प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे) 3×8 = 24 अंक
2. तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे। 1×16 = 16 अंक
   2×15=30 अंक
   70 अंक
3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. उपन्यास, कहानी आदि गद्य साहित्य की अनिवार्यता साहित्य में इसलिए है क्योंकि विद्यार्थी में इसके अध्ययन से सामाजिक दृष्टिकोण स्थापित होता है।
2. विभिन्न लेखकों द्वारा रचित पात्रों के माध्यम से वह समय को आत्मसात करता हुआ उसके समग्र मनोविज्ञान का अध्ययन करता है।
3. विद्यार्थियों में लेखन कौशल विकसित करना।
4. भविष्य में इस क्षेत्र में रोजगार के व्यापक अवसर हैं।
5. प्रतियोगिता परीक्षाओं की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण।

पाठ्यांशः

खण्ड–क– गोदान : प्रेमचन्द। **25 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ख– समय सरगम – कृष्णा सोबती। **20 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ग– निर्धारित निबंध : साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है (बालकृष्ण भट्ट), देवदारू (आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी), उत्तराफाल्गुनी के आस–पास (कुबेरनाथ राय)। **15 घण्टे / कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम द्वारा छात्र–छात्राओं को सामाजिक सरोकारों से अवगत कराना प्रमुख लक्षण है।
2. इस पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों को समकालीन चुनौतियों, जटिलताओं से अवगत कराना।

अनुशंसित ग्रंथः

1. प्रेमचन्द के उपन्यासों का शिल्प विधान : डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. गोदान : गोपाल राय
3. आधुनिक हिन्दी उपन्यास : संपादक भीष्म साहनी और रामजी मिश्र
4. हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियाँ– डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
5. हिन्दी उपन्यास : शिवनारायण श्रीवास्तव
6. श्रेष्ठ हिन्दी निबंधकार : डॉ. सुरेश गुप्ता
7. हिन्दी निबंध : उद्भव और विकास : डॉ. ओंकारनाथ शर्मा
8. निबंधकार बालकृष्ण भट्ट : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) हिन्दी

(एम.ए. प्रीवियस हिन्दी)

द्वितीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न–पत्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल एवं आधुनिक काल) (MHIN-201)

06 क्रेडिट 60 घण्टे/कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन प्रश्न निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 500 शब्द) प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 3×20 = 60 अंक
2. दो प्रश्न टिप्पणी परक (शब्द सीमा: 200 शब्द) तीनों खण्डों में से (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 2×5 = 10 अंक

70 अंक

3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. हिन्दी भाषा की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए भाषा के इतिहास की आवश्यकता पडती है। हिन्दी भाषा की समृद्ध परम्परा को जानने के लिए हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़ना–पढ़ाना आवश्यक है।
2. भाषा के इतिहास की जानकारी प्राप्त कर विद्यार्थी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ–साथ सरकारी और गैर–सरकारी, निजी तथा संस्थागत क्षेत्रों में अपने भविष्य का निर्माण कर सकते है।
3. वर्तमान में नई शिक्षा नीति के साथ हिन्दी साहित्य की उपयोगिता महत्त्वपूर्ण हो गई है। नई शिक्षा नीति में त्रिभाषा फॉर्मूला लागू किया गया है।

पाठ्यांश:

खण्ड–क– रीतिकाल–नामकरण की समस्या, तत्कालीन दरबारी संस्कृति और रीतिकाल, प्रमुख प्रवृत्तियाँ (रीतिबद्ध, रीतिमुक्त, रीतिसिद्ध) रीतिकाल के प्रमुख कवि–केशवदास, मतिराम, देव, पद्माकर, बिहारीलाल, भूषण तथा घनानन्द। **20 घण्टे/कक्षा**

खण्ड–ख– आधुनिक काल का काव्य : 1857 की क्रान्ति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, भारतेन्दु और उनका मण्डल। द्विवेदीयुग– महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, प्रमुख काव्य धाराएँ–छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता। **30 घण्टे/कक्षा**

खण्ड–ग– आधुनिक काल का गद्य साहित्य : उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध एवं अन्य विधाएँ। **10 घण्टे/कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. विद्यार्थियों में हिन्दी साहित्य का इतिहास न केवल व्यक्तिगत परिवर्तन बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिये भी शिक्षा की परिवर्तनकारी क्षमता का पता लगाने का प्रयास करता है।
2. यह पेपर छात्र–शिक्षकों के युवा मन में उठने वाले प्रश्नों और इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिये उन्हें मिली कुछ दिशाओं को स्पष्ट करता है।

अनुशंसित ग्रंथ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र (सं.) मयूर पेपर बैक्स, नई दिल्ली
3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
4. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ. रामकुमार वर्मा
5. हिन्दी साहित्य का आदिकाल : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. हिन्दी साहित्य की भूमिका : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. हिन्दी साहित्य का अतीत (दो भाग) : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण, दिल्ली
9. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती प्रकांशन, इलाहाबाद
10. हिन्दी का गद्य साहित्य : डॉ. रामचंद्र वर्मा

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. प्रीवियस हिन्दी)
द्वितीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
द्वितीय प्रश्न–पत्र : मध्यकालीन काव्य (MHIN-202)
06 क्रेडिट 60 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन व्याख्याएँ प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे) 3×8 = 24 अंक
2. तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे। 1×16 = 16 अंक
   2×15=30 अंक
   70 अंक
3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. इसमें आदिकाल, मध्यकाल के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पक्ष से विद्यार्थियों को जोड़ना है।
2. उस दौर में रचे भाषा के इतिहास, जिसमें पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवधी, ब्रज में लिखे कवियों की रचनाओं में समाहित उनके दर्शन से परिचय कराना है। जिससे विद्यार्थियों में मानवीय दृष्टि विकसित हो सके।
3. विद्यार्थी भाषा के महत्व को जानकर उसमें और अधिक नवाचार लाने, सहज ग्राह्य बनाने का प्रयास कर सके।
4. मौलिक रूप से स्वयं के शब्दकोश को समृद्धशाली बना सके।

पाठ्यांश:

खण्ड–क– भ्रमरगीत सार : सं. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (पद संख्या 21 से 50 तक)। **20 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ख– विनयपत्रिका : गीता प्रेस, गोरखपुर (पद संख्या 76 से 100 तक, कुल पद 25)। **25 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ग– मीरा मुक्तावली : सम्पादक नरोत्तम स्वामी, श्रीराम मेहरा, आगरा (पद संख्या 26 से 50 तक)। **15 घण्टे / कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. इस प्रश्न–पत्र में विद्यार्थी प्राचीन काव्य का अध्ययन करेंगे इस प्रश्न–पत्र के द्वारा उस युग की प्रतिनिधि रचनाओं का अध्ययन किया जायेगा।
2. प्राचीन काव्य द्वारा विद्यार्थियों में भारतीय प्राचीन साहित्य के विविध भाषा साहित्य के कवियों को समझने में सहायता होगी तथावे एक वैचारिक क्षमता को रेखांकित करने में समर्थ होंगे।

अनुशंसित ग्रंथ :

1. सूर का भ्रमरगीत : डॉ. शंकरदेव अवतरे
2. सूरदास : बृजेश्वर वर्मा
3. गोस्वामी तुलसीदास : आ. रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
4. तुलसी : डॉ. उदयभानु सिंह
5. मीरा पदावली : डॉ. शम्भु सिंह मनोहर
6. पचरंग चोला पहर सखी री : डॉ. माधव हाड़ा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. प्रीवियस हिन्दी)
द्वितीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
तृतीय प्रश्न–पत्र : काव्यशास्त्र -II (पाश्चात्य) (MHIN-203)
06 क्रेडिट 60 घण्टे/कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन प्रश्न निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 500 शब्द) प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 3×20 = 60 अंक
2. दो प्रश्न टिप्पणी परक (शब्द सीमा: 200 शब्द) तीनों खण्डों में से (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 2×5 = 10 अंक

70 अंक

3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. वैश्विक परिप्रेक्ष्य के मध्यनजर हिन्दी के विद्यार्थी को भारतीय काव्यशास्त्र के साथ–साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र का ज्ञान भी होना अत्यंत आवश्यक है।
2. शिक्षा, पब्लिशिंग हाउस, मीडिया, सामाजिक सेवाएं, संचार, कम्प्यूटर, लैंग्वेज, अनुसंधान, भाषा संबंधी क्षेत्रों में भाषा विज्ञान के बारे में अनुभव बेहद जरूरी है। हाल के वर्षों में विभिन्न उद्योगों में भाषा–विज्ञानियों की बेहद मांग है।
3. केन्द्रीय संस्थानों और कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति की जाती है जो अपने यहाँ हर प्रकार से हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देते हैं और हिन्दी में कामकाज को सुगम बनाते हैं। यदि आपने हिन्दी विषय के साथ में अंग्रेजी भी पढ़ी है तो राजभाषा अधिकारी या हिन्दी अनुवादक के रूप में भी कॅरियर बनाया जा सकता है।
4. नयी हिन्दी के जो क्षेत्र उभरे हैं उनमें यदि छात्र दक्षता हासिल कर लेता है तो सिनेमा में पटकथा लेखन, संवाद लेखन, गीत लेखन में रोजगार की व्यापक संभावनाएं हैं।
5. प्रतियोगी परीक्षाओ की दृष्टि से भी यह उपयागी प्रश्न–पत्र है।

पाठ्यक्रमः

खण्ड–क– पाश्चात्य काव्यशास्त्र – प्लेटो – काव्य चिंतन, अरस्तु – अनुकरण एवं त्रासदी सिद्धांत, लौंजाइनस – काव्य में उदात्त तत्त्व। **15 घण्टे/कक्षा**

खण्ड–ख– पाश्चात्य काव्यशास्त्र – टी.एस. इलियट – निर्वैयक्तिता का सिद्धान्त, आई.ए. रिचर्ड्स – सम्प्रेषण का सिद्धान्त, क्रोंचे – अभिव्यंजनावाद। नई समीक्षा। **20 घण्टे/कक्षा**

खण्ड–ग– आलोचना (सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक), हिन्दी का आलोचना शास्त्र – पाठालोचन, सैद्धान्तिक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, मनोवैज्ञानिक। **25 घण्टे/कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. इस प्रश्न–पत्र द्वारा विद्यार्थियों में काव्यशास्त्रियों के विचार एवं सिद्धान्त का अनुशीलन किया जायेगा।
2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम विद्यार्थियो में तार्किक तथा विश्लेषणात्मक प्रकृति का विकास करता है। साथ ही आलोचनात्मक अथवा समीक्षात्मक दृष्टि को विकसित करता है।

अनुशंसित ग्रंथः

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : शान्तिस्वरूप गुप्त
3. समीक्षा लोक : डॉ. भागीरथ मिश्र
4. पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त : गोविन्द त्रिगुणायत
5. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त : गोविन्द त्रिगुणायत
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास – तारकनाथ बाली, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली
7. पाश्चात्य साहित्य चिंतन – डॉ. निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
8. पाठालोचन : डॉ. सत्येन्द्र

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. प्रीवियस हिन्दी)
द्वितीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
चतुर्थ प्रश्न–पत्र : हिन्दी गद्य -II (हिन्दी कहानी) (MHIN-204)
06 क्रेडिट 60 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन व्याख्याएँ प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे) 3×8 = 24 अंक
2. तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे। 1×16 = 16 अंक
   2×15=30 अंक
   70 अंक
3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. उपन्यास, कहानी आदि गद्य साहित्य की अनिवार्यता साहित्य में इसलिए है क्योंकि विद्यार्थी में इसके अध्ययन से सामाजिक दृष्टिकोण स्थापित होता है।
2. विभिन्न लेखकों द्वारा रचित पात्रों के माध्यम से वह समय को आत्मसात करता हुआ उसके समग्र मनोविज्ञान का अध्ययन करता है।
3. विद्यार्थियों में लेखन कौशल विकसित करना।
4. भविष्य मे इस क्षेत्र में रोजगार के व्यापक अवसर हैं।
5. प्रतियोगिता परीक्षाओं की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण।

पाठ्यांश:

खण्ड–क– **निर्धारित आधुनिक कहानियाँ:**

1.	कफन	–	प्रेमचन्द	
2.	रोज	–	अज्ञेय	
3.	जिन्दगी और जोंक	–	अमरकान्त	
4.	खोई हुई दिशाएँ	–	कमलेश्वर	**25 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ख–

1.	तीसरी कसम	–	फणीश्वरनाथ रेणु	
2.	परिन्दे	–	निर्मल वर्मा	
3.	यही सच है	–	मन्नू भंडारी	**20 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ग–

1.	जहाँ लक्ष्मी कैद है	–	राजेन्द्र यादव	
2.	विनाश दूत	–	मृदुला गर्ग	
3.	परायी प्यास का सफर	–	आलमशाह खान	**15 घण्टे / कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम द्वारा छात्र–छात्राओं को सामाजिक सरोकारों से अवगत कराना प्रमुख लक्षण है।
2. इस पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों को समकालीन चुनौतियों, जटिलताओं से अवगत कराना।

अनुशंसित ग्रंथ :

1. मन्नू भंडारी का कथा साहित्य – गुलाबराव हाड़े
2. नई कहानी : संवेदना और शिल्प : राजेन्द्र यादव
3. हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ : सुरेन्द्र चौधरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
4. हिन्दी कहानी : अन्तरंग पहचान : डॉ. रामदरश मिश्र
5. एक दुनिया समानान्तर : सम्पादक राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
6. प्रतिनिधि कहानियाँ : स्वयं प्रकाश
7. कहानी : नई कहानी : डॉ. नामवर सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. कथाकार मन्नू भंडारी : अनीता राजूरकर
9. हिन्दी कहानी का इतिहास भाग 1,2,3 – गोपाल राय

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. फाइनल हिन्दी)
तृतीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
प्रथम प्रश्न–पत्र : हिन्दी गद्य -III (हिन्दी नाटक) (MHIN-301)
06 क्रेडिट 60 घण्टे/कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1.	तीन व्याख्याएँ प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)	3×8 = 24 अंक
2.	तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे।	1×16 = 16 अंक 2×15=30 अंक 70 अंक
3.	सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि–	3 घण्टे
	आन्तरिक मूल्यांकन–	30 अंक
	अधिकतम अंक–	100 अंक
	न्यूनतम अंक–	40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. हिन्दी नाटक महाविद्यालय स्तर पर इसलिये पढ़ाया जाना आवश्यक है इससे हिन्दी की विभिन्न विधाओं के साथ–साथ नाटक के विभिन्न रूपों से विद्यार्थी अवगत हो सकें।
2. नाटक को वर्तमान में इसलिये पढ़ाया जाना आवश्यक है कि विद्यार्थी नाटक की विधा को, उसकी ऐतिहासिकता के माध्यम से भारतीय सभ्यता और संस्कृति को समझ पाने में सक्षम हो सकें।
3. विद्यार्थियों के लिये नाटक बहुत उपयोगी है। इससे छात्रों में रंगमंच (थियेटर) की समझ विकसित हो सकेगी और वे नाटकों का मंचन सफलतापूर्वक कर सकेंगे।
4. हिन्दी नाटक भविष्य में छात्रों के लिये बहुत लाभदायक है। भूमंडलीकरण के दौर में अपने साहित्य को देश–विदेश में नाटकों के मंचन के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते है। मीडिया के युग में भारतीय संस्कृति और सभ्यता को नाटक के माध्यम से छात्र दिखा सकते है।
5. हिन्दी नाटक की समझ प्राप्त कर विद्यार्थी रोजगार के क्षेत्र में अनंत सम्भावानाओं को तलाश सकते हैं। एक श्रेष्ठ नाटककार, स्क्रिप्ट राइटर, नाटक निर्माता और फिल्मकार बन सकते हैं। नुक्कड़ नाटक से लेकर विश्व के विस्तृत फलक फिल्म तक एक नाटककार अपने नाटक के माध्यम से अपनी संस्कृति और सभ्यता को प्रदर्शित कर सकता है।

पाठ्यक्रमः

खण्ड–क–	अंधेर नगरी : भारतेन्दु हरिशचन्द्र।	**15 घण्टे/कक्षा**
खण्ड–ख–	स्कन्दगुप्त : जयशंकर प्रसाद।	**25 घण्टे/कक्षा**
खण्ड–ग–	आषाढ़ का एक दिन : मोहन राकेश।	**20 घण्टे/कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. हिन्दी गद्य की विविध विविध विधाओं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, जीवनी, आत्मकथा आदि के अध्ययन से विद्यार्थियों में परिवार, समाज एवं राष्ट्र के प्रति नवीन दृष्टिकोण स्थापित हो सकेगा।
2. विद्यार्थियों में लेखन कौशल विकसित हो सकेगा।
3. प्रतियोगी परीक्षाओं एवं रोजगार की दृष्टि से भी यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

अनुशंसित ग्रंथः

1. आज के रंग नाटक : गिरीश रस्तोगी
2. अंधेर नगरी : सं. गिरीश रस्तोगी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. रंग दर्शन : नेमीचन्द्र जैन
4. जयशंकर प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन : जगन्नाथ शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. बीसवीं सदी में हिन्दी नाटक और रंगमंच : गिरीश रस्तोगी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. फाइनल हिन्दी)
तृतीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
द्वितीय प्रश्न–पत्र : निर्गुण काव्य (MHIN-302)
06 क्रेडिट 60 घण्टे/कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1.	तीन व्याख्याएँ प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)	3×8 = 24 अंक
2.	तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे।	1×16 = 16 अंक 2×15=30 अंक 70 अंक
3.	सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि–	3 घण्टे
	आन्तरिक मूल्यांकन–	30 अंक
	अधिकतम अंक–	100 अंक
	न्यूनतम अंक–	40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. संतों की विचारधारा एवं सामाजिक दृष्टिकोण को विवेचित करना।
2. साधना के पक्ष को समझाना।
3. मानव के धर्म के प्रति विचार को समझाना।
4. प्रेमाश्रयी, ज्ञानाश्रयी परम्परा, ज्ञान की वास्तविक परिभाषा को समझाना।
5. भारत में विकसित मध्यकालीन संस्कृति का आंदोलन के पक्ष का सम्यक् अध्ययन करना।

पाठ्यक्रमः

खण्ड–क–	कबीर : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन (पद संख्या 1, 2, 5, 10, 11, 12, 14, 22, 35, 39, 42, 49, 55, 57, 66) कुल 15 पद।	**25 घण्टे/कक्षा**
खण्ड–ख–	जायसी ग्रंथावली : सं. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा (**नागमति वियोग खण्ड – प्रथम 10 दोहे**)।	**20 घण्टे/कक्षा**
खण्ड–ग–	दादूदयाल : श्री दादू वाणी : सं. रामप्रसाद दास स्वामी, प्रकाशक दादुदयालु, जयपुर, अथराग असावरी, पद संख्या 213 से 230 तक	**15 घण्टे/कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. इस प्रश्न–पत्र द्वारा विद्यार्थी निर्गुण काव्य का अध्ययन करेंगे। इस प्रश्न–पत्र में निर्गुण काव्य धारा की रचनाओं से छात्रों को अवगत कराया जायेगा।
2. इस प्रश्न–पत्र में हिन्दी के शीर्ष निर्गुण कवियों के गहन अध्ययन का परिज्ञान करवाया जायेगा।

अनुशंसित ग्रंथः

1. कबीर : विजेन्द्र स्नातक
2. कबीर साहित्य की परख : गोविन्द त्रिगुणयत
3. राजस्थान का संत साहित्य : पुरूषोत्तम मेनारिया
4. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
5. हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय : डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थवाल
6. उत्तरी भारत की संत परम्परा : परशुराम चतुर्वेदी
7. जायसी ग्रंथावली : सं. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
8. जायसी : विजयदेवनारायण साही

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. फाइनल हिन्दी)
तृतीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
तृतीय प्रश्न–पत्र : भाषा विज्ञान -I (MHIN-303)
06 क्रेडिट 60 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन प्रश्न निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 500 शब्द) प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 3×20 = 60 अंक
2. दो प्रश्न टिप्पणीपरक (शब्द सीमा: 200 शब्द) तीनों खण्डों में से (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 2×5 = 10 अंक

70 अंक

3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. भाषा विज्ञान हमें अपनी दुनिया को समझने में मदद करता है। विश्व भाषाओं की जटिलताओं को समझने के अलावा इस ज्ञान को लोगों के बीच संचार को बेहतर बनाने, अनुवाद गतिविधियों में योगदान देने, साक्षरता प्रयासों में सहायता करने और भाषण विकारों के इलाज के लिये लागू किया जा सकता है।
2. अनुवाद के लिये भाषा–विज्ञान की सहायता ली जाती है। भाषा विज्ञान के संकेतों के द्वारा दूर–संचार पद्धति के लिये आवश्यक संकेत उपलब्ध होते हैं।
3. भाषा यंत्रीकरण में सहायक भाषा विज्ञान भाषा–विषयक यंत्रों के निर्माण में विशेष सहयोगी है।
4. आजकल कॉल सेंटरों से जुडे रोजगारों की भरमार है, भाषा–विज्ञानी सीधे अपनी जरूरतें पूरी करते हैं, ये केन्द्र न केवल प्रशिक्षण मॉड्यूल्स तैयार करने के लिये भाषा विज्ञानियों की सेवा लेते हैं, बल्कि अपने प्रशिक्षुओं को पेशेवर के तौर पर प्रशिक्षित करते हैं। इस उद्योग में भाषा–विज्ञानियों की असीमित मांग हमेशा बनी रहेगी।
5. आजकल विज्ञापनों की भाषा, आलोचना की भाषा सभी हिन्दी के एक बदले हुए संसार के अच्छे उदाहरण हैं। गूगल के कारण हिन्दी में कम्प्यूटर प्रयोग को आसान बना दिया गया है।

पाठ्यक्रमः

खण्ड–क– भाषाः अर्थ, महत्त्व, विशेषताएँ, परिवर्तन के कारण, भाषा के विविध रूप, भाषा विज्ञान से तात्पर्य, ज्ञान की अन्य शाखाओं से सम्बन्ध, भाषा अध्ययन के विविध प्रकार, मूल अवधारणाएँ एवं सामान्य परिचय, ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान एवं शब्द विज्ञान। **25 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ख– अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएँ, ध्वनि परिवर्तन के कारण और दिशाएँ– ध्वनियों का वर्गीकरण, रूप परिवर्तन एवं वाक्य परिवर्तन के कारण और दिशाएँ। **20 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ग– भारत के विविध भाषा परिवार– आर्य, द्रविड, कोल एवं नाग, प्राचीन एवं मध्यकालीन आर्य भाषाएं– संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश अवहट्ट, पुरानी हिन्दी। **15 घण्टे / कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. यह प्रश्न–पत्र हिन्दी भाषा एवं उसके इतिास से छात्रों को परिचित कराता है।
2. इस प्रश्न–पत्र द्वारा हिन्दी भाषा परिवार की विविध बोलियों एवं उप–भाषाओं की जानकारी देने के साथ–साथ छात्रों में भाषा–विज्ञान कौशल को विकसित करना है।

अनुशंसित ग्रंथः

1. भाषा विज्ञानः डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
2. भाषा विज्ञानः डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
3. हिन्दी भाषा का इतिहासः डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी भाषा का इतिहासः डॉ धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तान एकेड़ेमी
5. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकासः डॉ. उदयनारायण तिवारी
6. हिन्दी की बोलियाँ एवं उपभाषाएंः डॉ. हरदेव बाहरी
7. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्रः डॉ. कपिल देव द्विवेदी
8. राजस्थानी भाषाः डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
9. हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक व्याकरणः डॉ. माताबदल जायसवाल
10. हिन्दी भाषा और साहित्यः डॉ. भोलानाथ तिवारी
11. भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी : डॉ. रामविलास शर्मा

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. फाइनल हिन्दी)
तृतीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
चतुर्थ प्रश्न–पत्र : रीतिकालीन काव्य (MHIN-304)
06 क्रेडिट 60 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1.	तीन व्याख्याएँ प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)	3×8 = 24 अंक
2.	तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे।	1×16 = 16 अंक 2×15=30 अंक 70 अंक
3.	सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि–	3 घण्टे
	आन्तरिक मूल्यांकन–	30 अंक
	अधिकतम अंक–	100 अंक
	न्यूनतम अंक–	40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. इसमें आदिकाल, मध्यकाल के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पक्ष से विद्यार्थियों को जोड़ना है।
2. उस दौर में रचे भाषा के इतिहास, जिसमें पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवधी, ब्रज में लिखे कवियों की रचनाओं में समाहित उनके दर्शन से परिचय कराना है। जिससे विद्यार्थियों में मानवीय दृष्टि विकसित हो सके।
3. विद्यार्थी भाषा के महत्व को जानकर उसमें और अधिक नवाचार लाने, सहज ग्राह्य बनाने का प्रयास कर सके।
4. मौलिक रूप से स्वयं के शब्दकोश को समृद्धशाली बना सके।

पाठ्य पुस्तकें:

खण्ड–क–	बिहारी रत्नाकर : दोहा (पद) संख्या 101 से 125 तक।	**20 घण्टे / कक्षा**
खण्ड–ख–	भूषण – भूषण ग्रंथावली : सं.आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, प्रथम 20 छन्द।	**20 घण्टे / कक्षा**
खण्ड–ग–	घनानन्द कवित्त : सं.आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान प्रकाशन – प्रथम 20 छन्द।	**20 घण्टे / कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य प्रश्न–पत्र पढ़ने से विद्यार्थियों को उस दौर के काव्य एवं कवियों के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे विद्यार्थियों में सत्य, प्रेम, शान्ति, सद्भाव, परोपकार, नैतिकता, सादगी, सहिष्णुता जैसे मानवीय गुणों का विकास होता है जिससे उनका चरित्र–निर्माण हो सकेगा।
2. इससे विद्यार्थियों में भाषा कौशल विकसित हो सकेगा।

अनुशंसित ग्रंथ:

1. बिहारी की वाग्विभूति : आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
2. बिहारी का नया मूल्यांकन : डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. स्वच्छन्द काव्यधारा और घनानन्द : डॉ. मनोहरलाल गौड, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
4. रीतिकाव्य : डॉ. नन्द किशोर नवल
5. भूषण ग्रंथावली : सं.आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र।

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. फाइनल हिन्दी)
तृतीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
पंचम प्रश्न–पत्र : विशिष्ट अध्ययन (कोई एक)
(क) कवि, साहित्यकार
(1) तुलसीदास (MHIN-305 (A))
06 क्रेडिट 60 घण्टे/कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन व्याख्याएँ खण्ड क से दो एवं खण्ड ख से एक व्याख्या (आन्तरिक विकल्प देय होंगे) 3×8 = 24 अंक
2. तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे। 1×16 = 16 अंक
   2×15=30 अंक
   70 अंक
3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. तुलसीदासजी का सम्पूर्ण साहित्य लोकमंगल के उच्च उद्देश्यों, उच्च मानवीय मूल्यों के स्थापना के निमित्त है उनके साहित्य को पढकर निश्चित रूप से विद्यार्थी वह नहीं रह जाता, जो उसके पढने के पूर्व था। उसके चरित्र पर उत्कर्षकारी प्रभाव पडता है और रामादि पात्रों के उच्च मानवीय मूल्य उसे मस्तिष्क को आच्छादित कर देते हैं।
2. तुलसी का मूल संदेश है – मानव प्रेम। इसलिए उन्होंने अपने युग की स्थितियों–परिस्थितियों से दुखी होकर मर्यादापुरूषोत्तम राम के परिवार का आदर्श जनता के समक्ष प्रस्तुत करना।
3. गोस्वामी तुलसीदास की रचना देश एवं समाज के उत्थान के लिए है।

पाठ्यग्रंथः

खण्ड–क–	रामचरितमानसः गीताप्रेस गोरखपुर– उत्तरकाण्ड। प्रारम्भ के 15 दोहे।	**25 घण्टे/कक्षा**
खण्ड–ख–	विनय पत्रिकाः गीताप्रेस गोरखपुर– पद संख्या – 137 से 161 तक।	**25 घण्टे/कक्षा**
खण्ड–ग–	समीक्षा : तुलसी के साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि।	**10 घण्टे/कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. इस प्रश्न–पत्र द्वारा विद्यार्थियों में भक्तिकाल की पृष्ठभूमि से अवगत करवाते हुये उन्हें नैतिक मूल्यों का ज्ञान करवाया जाता है।
2. भारतीय समाज में समन्वय की भावना का ज्ञान करवाना तुलसी साहित्य की प्रमुख भावना है जिससे छात्र अवगत हो सकेंगे।

अनुशंसित ग्रंथः

1. गोस्वामी तुलसीदासः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. तुलसीदास और उनका युगः राजपति दीक्षित
3. तुलसीदासः डॉ. माताप्रसाद गुप्त
4. तुलसीदासः रासबिहारी शुक्ल
5. तुलसीदासः चन्द्रबली पाण्डेय
6. रामचरितमानस का काव्यशास्त्रीय अनुशीलनः डॉ. रामकुमार पाण्डेय
7. तुलसीदर्शनः बल्देव प्रसाद मिश्र
8. तुलसीः काव्य– मीमांसा : डॉ. उदयभानु सिंह

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. फाइनल हिन्दी)
तृतीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
पंचम प्रश्न–पत्र : विशिष्ट अध्ययन (कोई एक)
(क) कवि, साहित्यकार
(2) प्रेमचन्द (MHIN-305 (B))
06 क्रेडिट 60 घण्टे/कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन व्याख्याएँ खण्ड क से दो एवं खण्ड ख से एक व्याख्या (आन्तरिक विकल्प देय होंगे) 3x8 = 24 अंक
2. तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे। 1x16 = 16 अंक
   2x15 = 30 अंक
   70 अंक
3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. प्रेमचन्द वर्तमान युग की आवश्यकता है। छात्रों को प्रेमचन्द पढना–पढाना इसलिये आवश्यक है क्योंकि प्रेमचन्द का सम्पूर्ण साहित्य यथार्थ और सादा जीवन जीने की प्रेरणा देता है।
2. कहानी और उपन्यास की परम्परा को जानने के लिये प्रेमचन्द के साहित्य की आवश्यकता पड़ती है। विद्यार्थी साहित्य की परम्परा को प्रेमचन्द साहित्य के माध्यम से बहुत अच्छी तरह से समझ सकता है।
3. प्रेमचन्द के समय का समाज और उसकी समस्याएँ आज भी है इसलिये प्रेमचन्द आज बहुत प्रासंगिक है। विद्यार्थी प्रेमचन्द साहित्य द्वारा वर्तमान समस्याओं का समाधान ढूंढ सकते हैं क्योंकि उन्होंने अपने साहित्य में सामाजिक समस्या और उसका समाधान प्रस्तुत किया है।

पाठ्यग्रंथ:

खण्ड–क–	रंगभूमि (उपन्यास)।	30 घण्टे/कक्षा
खण्ड–ख–	कुछ विचार (निबंध संग्रह)।	20 घण्टे/कक्षा
खण्ड–ग–	समीक्षा : प्रेमचंद के साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन।	10 घण्टे/कक्षा

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. मुंशी प्रेमचन्द के इस प्रश्न–पत्र द्वारा विद्यार्थियों में समकालीन परिवेश की जटिलताओं को समझने की क्षमता विकसित होगी।
2. इस प्रश्न–पत्र द्वारा विद्यार्थियों में साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों में अभिवृद्धि हो सकेगी।

अनुशंसित ग्रंथ:

1. प्रेमचन्द और उनका युग : डॉ. रामविलास शर्मा
2. प्रेमचन्द साहित्य कोष : डॉ. कमल किशोर गोयनका
3. कलम का सिपाही : अमृतराय
4. प्रेमचन्द : सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
5. रंगभूमि : नये आयाम : डॉ. कमल किशोर गोयनका
6. प्रेमचन्द के साहित्य सिद्धान्त : डॉ. नरेन्द्र कोहली

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी

(एम.ए. फाइनल हिन्दी)

चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न–पत्र : आलोचना एवं आलोचक (MHIN-401)

06 क्रेडिट 60 घण्टे/कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन प्रश्न निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 500 शब्द) प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 3×20 = 60 अंक
2. दो प्रश्न टिप्पणीपरक (शब्द सीमा: 200 शब्द) तीनों खण्डों में से (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 2×5 = 10 अंक

70 अंक

3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे

आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक

अधिकतम अंक– 100 अंक

न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. विद्यार्थियो को कवि और उसकी कृति से साक्षात्कार करवाना।
2. आलोचना के माध्यम से विद्यार्थी समाज में और कला कृतियों के बीच उस कृति का स्थान और महत्त्व तय करवाना।
3. आलोचना एवं समालोचना किसी वस्तु/विषय की, उसके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुये उसके गुण–दोषों एवं उपयुक्तता का विवेचन करने वाली साहित्यिक विधा है।

पाठ्य ग्रंथ:

खण्ड–क– हिन्दी आलोचना का उद्‌भव और विकास। **25 घण्टे/कक्षा**

खण्ड–ख– आलोचनात्मक निबंध : काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल), भारतीय साहित्य की प्राण शक्ति (आचार्य हजारी प्रसाद दिवेदी) छायावाद (आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी)। **20 घण्टे/कक्षा**

खण्ड–ग– हिन्दी के प्रमुख आलोचक – डॉ. नगेन्द्र, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. रामविलास शर्मा। **15 घण्टे/कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. इस प्रश्न–पत्र द्वारा विद्यार्थियों में विस्तृत ज्ञान के साथ आलोचना एपं आलोच्य विषय के ज्ञान को परिष्कृत किया जा सकेगा।
2. इस प्रश्न–पत्र द्वारा छात्रों में पाठ अध्ययन, विश्लेषण, मूल्यांकन की प्रक्रिया से अवगत कराया जाता है।

अनुशंसित ग्रंथ:

1. आलोचक की आस्था : डॉ. नगेन्द्र
2. आलोचना के आधार स्तम्भ : स. रामेश्वर खण्डेलवाल एवं डॉ. सुरेश चन्द्र गुप्त
3. आलोचक और आलोचना : डॉ. बच्चन सिंह
4. हिन्दी आलोचना का विकास : नन्द किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. आलोचक और आलोचना सिद्धान्त : रतन कुमार पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. फाइनल हिन्दी)
चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम
द्वितीय प्रश्न–पत्र : आधुनिक काव्य -I (MHIN-402)
06 क्रेडिट 60 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन व्याख्याएँ प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे) 3×8 = 24 अंक
2. तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे। 1×16 = 16 अंक
   2×15=30 अंक
   70 अंक
3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. आज की इस भागदौड भरी जिन्दगी में थोड़े से ठहराव के लिये साहित्य के माध्यम से अतीत के सुनहरे दौर मे जाया जा सकता है, खासतौर से इक्कीसवीं सदी के बच्चों को विशेष रूप से उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में लिखे गये साहित्य को जरूर पढ़ना व समझना चाहिए।
2. इंटरनेट के इस दौर में हिन्दी के आधुनिक कवियों की किताबें बहुत लाभदायक है। आज के दौर में हिन्दी वेब कंटेन्ट को ज्यादा पढ़ा जाने लगा है।
3. हिन्दी का अध्ययन करने वालों के लिये अध्यापन एक पारम्परिक कॅरियर विकल्प के रूप में लोकप्रिय है।
4. UPSC सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा में हिन्दी को वैकल्पिक साहित्यिक विषयों की सूची में शामिल किया गया है। IAS मुख्य परीक्षा मे अनिवार्य भाषा के प्रश्न पत्र के लिये हिन्दी भी एक विकल्प है। आधुनिक काव्य की सभी मुख्य कविताओं, सभी कवियों का परिचय, गद्य साहित्य की अधिकांशतः विधाओं को इस (IAS) परीक्षा के पाठ्यक्रम को शामिल किया गया है।

पाठ्य ग्रंथः

खण्ड–क– कामायनी : जयशंकर प्रसाद (श्रद्धा सर्ग)। **15 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ख– राग विराग : सं. डॉ. रामविलास शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद (**राम की शक्ति पूजा** शीर्षक कविता)। **25 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ग– आंगन के पार द्वार : अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ (**असाध्य वीणा** कविता)। **20 घण्टे / कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. आधुनिक हिन्दी काव्य प्रश्न–पत्र से विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य में आधुनिकता, नवजागरण, प्रकृति अध्यात्म, राष्ट्रीयता, देशप्रेम की भावना का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. इससे विद्यार्थियों में भाषा कौशल विकसित हो पायेगा।

अनुशंसित ग्रंथः

1. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ : डॉ. नगेन्द्र
2. कामायनी एक पुनर्विचार : गजानन माधव मुक्तिबोध
3. निराला की साहित्य साधना : डॉ. रामविलास शर्मा
4. निराला आत्महंत आस्था : दूधनाथ सिंह
5. अज्ञेय : सृजन की समग्रता : डॉ. रामकमल राय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. असाध्य वीणा : पाठ और आलोचनात्मक संदर्भ : सं. छब्बिल कुमार मेहेर, आधार प्रकाशन।

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी

(एम.ए. फाइनल हिन्दी)

चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम

तृतीय प्रश्न–पत्र : भाषा विज्ञान–II (MHIN-403)

06 क्रेडिट 60 घण्टे/कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन प्रश्न निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 500 शब्द) प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 3×20 = 60 अंक
2. दो प्रश्न टिप्पणीपरक (शब्द सीमा: 200 शब्द) तीनों खण्डों में से (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। 2×5 = 10 अंक

70 अंक

3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे

आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक

अधिकतम अंक– 100 अंक

न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. भाषा विज्ञान हमें अपनी दुनिया को समझने में मदद करता है। विश्व भाषाओं की जटिलताओं को समझने के अलावा इस ज्ञान को लोगों के बीच संचार को बेहतर बनाने, अनुवाद गतिविधियों में योगदान देने, साक्षरता प्रयासों में सहायता करने और भाषण विकारों के इलाज के लिये लागू किया जा सकता है।
2. अनुवाद के लिये भाषा–विज्ञान की सहायता ली जाती है। भाषा विज्ञान के संकेतों के द्वारा दूर–संचार पद्धति के लिये आवश्यक संकेत उपलब्ध होते हैं।
3. भाषा यंत्रीकरण में सहायक भाषा विज्ञान भाषा–विषयक यंत्रों के निर्माण में विशेष सहयोगी है।
4. आजकल कॉल सेंटरों से जुडे रोजगारों की भरमार है, भाषा–विज्ञानी सीधे अपनी जरूरतें पूरी करते हैं, ये केन्द्र न केवल प्रशिक्षण मॉड्यूल्स तैयार करने के लिये भाषा विज्ञानियों की सेवा लेते हैं, बल्कि अपने प्रशिक्षुओं को पेशेवर के तौर पर प्रशिक्षित करते हैं। इस उद्योग में भाषा–विज्ञानियों की असीमित मांग हमेशा बनी रहेगी।
5. आजकल विज्ञापनों की भाषा, आलोचना की भाषा सभी हिन्दी के एक बदले हुए संसार के अच्छे उदाहरण हैं। गूगल के कारण हिन्दी में कम्प्यूटर प्रयोग को आसान बना दिया गया है।

पाठ्यक्रम:

खण्ड–क– आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ: वर्गीकरण, हिन्दी की उपभाषाएं एवं बोलिया : खड़ी, ब्रज और राजस्थानी (मारवाड़ी, हाडौती और मेवाती), राजभाषा हिन्दी, हिन्दी की ध्वनियाँ, वर्गीकरण एवं सामान्य परिचय। **25 घण्टे/कक्षा**

खण्ड–ख– हिन्दी व्याकरण : संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण एवं परसर्ग। **10 घण्टे/कक्षा**

खण्ड–ग– लिपि की परिभाषा, लिपि और भाषा का सम्बन्ध, ब्राह्मी लिपि तथा खरोष्ठी लिपि की विशेषताएँ, देवनागरी लिपि का उद्भव एवं विकास, देवनागरी लिपि की विशेषताएं। **25 घण्टे/कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. यह प्रश्न–पत्र हिन्दी भाषा एवं उसके इतिहास से छात्रों को परिचित कराता है।
2. इस प्रश्न–पत्र द्वारा हिन्दी भाषा परिवार की विविध बोलियों एवं उप–भाषाओं की जानकारी देने के साथ–साथ छात्रों में भाषा–विज्ञान कौशल को विकसित करना है।

अनुशंसित ग्रंथ:

1. भाषा विज्ञान: डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
2. भाषा विज्ञान: डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
3. हिन्दी भाषा का इतिहास: डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी भाषा का इतिहास: डॉ धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तान एकेडेमी
5. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास: डॉ. उदयनारायण तिवारी
6. हिन्दी की बोलियाँ एवं उपभाषाएं: डॉ. हरदेव बाहरी
7. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र: डॉ. कपिल देव द्विवेदी
8. राजस्थानी भाषा: डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
9. हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक व्याकरण: डॉ. माताबदल जायसवाल
10. हिन्दी भाषा और साहित्य: डॉ. भोलानाथ तिवारी
11. भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी : डॉ. रामविलास शर्मा

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. फाइनल हिन्दी)
चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम
चतुर्थ प्रश्न–पत्र : आधुनिक काव्य –II (MHIN-404)
06 क्रेडिट 60 घण्टे/कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन व्याख्याएँ प्रत्येक खण्ड से एक (आन्तरिक विकल्प देय होंगे) 3×8 = 24 अंक
2. तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे। 1×16 = 16 अंक
   2×15=30 अंक
   70 अंक
3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. आज की इस भागदौड भरी जिन्दगी में थोड़े से ठहराव के लिये साहित्य के माध्यम से अतीत के सुनहरे दौर मे जाया जा सकता है, खासतौर से इक्कीसवीं सदी के बच्चों को विशेष रूप से उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में लिखे गये साहित्य को जरूर पढ़ना व समझना चाहिए।
2. इंटरनेट के इस दौर में हिन्दी के आधुनिक कवियों की किताबें बहुत लाभदायक है। आज के दौर में हिन्दी वेब कंटेन्ट को ज्यादा पढ़ा जाने लगा है।
3. हिन्दी का अध्ययन करने वालो के लिये अध्यापन एक पारम्परिक कॅरियर विकल्प के रूप में लोकप्रिय है।
4. UPSC सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा में हिन्दी को वैकल्पिक साहित्यिक विषयों की सूची में शामिल किया गया है। IAS मुख्य परीक्षा मे अनिवार्य भाषा के प्रश्न पत्र के लिये हिन्दी भी एक विकल्प है। आधुनिक काव्य की सभी मुख्य कविताओं, सभी कवियों का परिचय, गद्य साहित्य की अधिकांशतः विधाओ को इस (IAS) परीक्षा के पाठ्यक्रम को शामिल किया गया है।

पाठ्य पुस्तकें :

1. खण्ड–क– मुक्तिबोध की कविताएँ : भूरी–भूरी खाक धूल, बबूल (शीर्षक कविताएँ, भारतीय ज्ञानपीठ)। **20 घण्टे/कक्षा**
2. खण्ड–ख– कात्यायनी की कविताएँ : सात भाइयों के बीच चम्पा, फुटपाथ पर कुर्सी (शीर्षक कविताएँ)। **20 घण्टे/कक्षा**
3. खण्ड–ग– नन्दकिशोर आचार्य की कविताएँ : बाँसुरी और मोर पाँख, गूँगा हो जाना – 1, गूँगा हो जाना – 2, क्या करूंगा रघुवीर जी (शीर्षक कविताएँ, वाग्देवी से प्रकाशित)। **20 घण्टे/कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. आधुनिक हिन्दी काव्य प्रश्न–पत्र से विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य में आधुनिकता, नवजागरण, प्रकृति अध्यात्म, राष्ट्रीयता, देशप्रेम की भावना का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. इससे विद्यार्थियों में भाषा कौशल विकसित हो पायेगा।

अनुशंसित ग्रंथ :

1. हिन्दी की लम्बी कविताओं का शिल्प विधान : डॉ. नरेन्द्र मोहन
2. मुक्तिबोध : अशोक चक्रधर
3. समकालीन काव्य यात्रा – नन्दकिशोर नवल

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. फाइनल हिन्दी)
चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम
पंचम प्रश्न–पत्र : विशिष्ट अध्ययन (कोई एक)
(क) कवि, साहित्यकार
(1) तुलसीदास (MHIN-405(A))
06 क्रेडिट 60 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन व्याख्याएँ खण्ड क से दो एवं खण्ड ख से एक व्याख्या (आन्तरिक विकल्प देय होंगे) 3×8 = 24 अंक
2. तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे। 1×16 = 16 अंक
   2×15=30 अंक
   70 अंक
3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
   आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
   अधिकतम अंक– 100 अंक
   न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. तुलसीदासजी का सम्पूर्ण साहित्य लोकमंगल के उच्च उद्देश्यों, उच्च मानवीय मूल्यों के स्थापना के निमित्त है उनके साहित्य को पढकर निश्चित रूप से विद्यार्थी वह नहीं रह जाता, जो उसके पढने के पूर्व था। उसके चरित्र पर उत्कर्षकारी प्रभाव पडता है और रामादि पात्रों के उच्च मानवीय मूल्य उसे मस्तिष्क को आच्छादित कर देते हैं।
2. तुलसी का मूल संदेश है – मानव प्रेम। इसलिए उन्होंने अपने युग की स्थितियों–परिस्थितियों से दुखी होकर मर्यादापुरूषोत्तम राम के परिवार का आदर्श जनता के समक्ष प्रस्तुत करना।
3. गोस्वामी तुलसीदास की रचना देश एवं समाज के उत्थान के लिए है।

पाठ्य ग्रंथ :

खण्ड–क–	गीतावली : गीता प्रेस, गोरखपुर (प्रथम 15 छन्द)।	**25 घण्टे / कक्षा**
खण्ड–ख–	कवितावली : गीता प्रेस, गोरखपुर (प्रथम 20 छन्द)।	**25 घण्टे / कक्षा**
खण्ड–ग–	समीक्षा : तुलसी के साहित्य में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना।	**10 घण्टे / कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. इस प्रश्न–पत्र द्वारा विद्यार्थियों में भक्तिकाल की पृष्ठभूमि से अवगत करवाते हुये उन्हें नैतिक मूल्यों का ज्ञान करवाया जाता है।
2. भारतीय समाज में समन्वय की भावना का ज्ञान करवाना तुलसी साहित्य की प्रमुख भावना है जिससे छात्र अवगत हो सकेंगे।

अनुशंसित ग्रंथः

1. गोस्वामी तुलसीदास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. तुलसीदास और उनका युगः राजपति दीक्षित
3. तुलसीदासः डॉ. माताप्रसाद गुप्त
4. तुलसीदासः चन्द्रबली पाण्डेय
5. तुलसी–काव्य–मीमांसा : डॉ. उदयभानु सिंह

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) हिन्दी
(एम.ए. फाइनल हिन्दी)
चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम
पंचम प्रश्न–पत्र : विशिष्ट अध्ययन (कोई एक)
(क) कवि, साहित्यकार
(2) प्रेमचन्द (MHIN-405(B))
06 क्रेडिट 60 घण्टे / कक्षा

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. तीन व्याख्याएँ खण्ड क से एक एवं खण्ड ख से दो व्याख्याएं (आन्तरिक विकल्प देय होंगे) 3x8 = 24 अंक
2. तीन प्रश्न प्रत्येक खण्ड से एक निबन्धात्मक, आलोचनात्मक (शब्द सीमा : 450 शब्द) (आन्तरिक विकल्प देय होंगे)। खण्ड 'क' का प्रश्न 16 अंक एवं खण्ड 'ख' एवं 'ग' के प्रश्न 15–15 अंक के होंगे। 1x16 = 16 अंक
2x15 = 30 अंक
70 अंक
3. सेमेस्टर परीक्षा की समयावधि– 3 घण्टे
आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक
अधिकतम अंक– 100 अंक
न्यूनतम अंक– 40 अंक

उद्देश्य (Objective) :–

1. प्रेमचन्द वर्तमान युग की आवश्यकता है। छात्रों को प्रेमचन्द पढना–पढाना इसलिये आवश्यक है क्योंकि प्रेमचन्द का सम्पूर्ण साहित्य यथार्थ और सादा जीवन जीने की प्रेरणा देता है।
2. कहानी और उपन्यास की परम्परा को जानने के लिये प्रेमचन्द के साहित्य की आवश्यकता पड़ती है। विद्यार्थी साहित्य की परम्परा को प्रेमचन्द साहित्य के माध्यम से बहुत अच्छी तरह से समझ सकता है।
3. प्रेमचन्द के समय का समाज और उसकी समस्याएँ आज भी है इसलिये प्रेमचन्द आज बहुत प्रासंगिक है। विद्यार्थी प्रेमचन्द साहित्य द्वारा वर्तमान समस्याओं का समाधान ढूंढ सकते है क्योंकि उन्होंने अपने साहित्य में सामाजिक समस्या और उसका समाधान प्रस्तुत किया है।

पाठ्यग्रंथ:

खण्ड–क– प्रेमचन्द कृत – मानसरोवर भाग–1 में से चयनित कहानियाँ – 1. अलग्योझा, 2. ईदगाह, 3. बड़े भाई साहब, 4. नशा, 5. ठाकुर का कुआँ, 6. पूस की रात. 7. धिक्कार, 8. मनोवृत्ति। **25 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ख– गबन (उपन्यास)। **25 घण्टे / कक्षा**

खण्ड–ग– समीक्षा : प्रेमचन्द के कथा साहित्य में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना। **10 घण्टे / कक्षा**

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) :–

1. मुंशी प्रेमचन्द के इस प्रश्न–पत्र द्वारा विद्यार्थियों में समकालीन परिवेश की जटिलताओं को समझने की क्षमता विकसित होगी।
2. इस प्रश्न–पत्र द्वारा विद्यार्थियों में साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों में अभिवृद्धि हो सकेगी।

अनुशंसित ग्रंथ:

1. प्रेमचन्द : जीवन, कला और कृतित्व : हंसराज रहबर
2. प्रेमचन्द घर में : शिवरानी देवी
3. किसान, राष्ट्रीय आन्दोलन और प्रेमचन्द : वीर भारत तलवार
4. प्रेमचन्द : साहित्यिक विवेचन : नन्द दुलारे वाजपेयी
5. प्रेमचन्द विश्वकोष (दो खण्ड) : डॉ. कमल किशोर गोयनका